भारत संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन का आभारी है । हमें आशा है वे पहिले से भी अधिक अच्छे उपकरण देते है ।

किसानों को वर्तमान संकट में बिना मूल्यों का विचार किये उत्पादन दुगुना करना चाहिये । चीन के साथ लड़ाई बहुत समय तक चलेगी । हमें बहुत कठिन समय का सामना करना है ।

प्रत्येक क्षेत्र में मितव्ययता बरती जानी चाहिये । संसद् और राज्य विधान मंडलों के सदस्यों को अपना आधा वेतन नकद लेना चाहिये और आधा डिफेंस बांडों के रूप में ।

†**श्री श० ना० चतुर्वेदी** (फीरोजाबाद) : चीन ने इतिहास में सब से बड़ी दगाबाजी की है । मेरे विचार से चीन की मित्रता तथा उसके हित के लिये किसी भी देश ने इतना प्रयत्न नहीं किया जितना कि भारत ने किया तथापि पांच वर्षों तक भारत के विरुद्ध झूठा प्रचार, जालसाजी और अन्त में खुले आम आक्रमण कर चीन ने हमारी आंखें खोल दीं । तब जाकर हमें चेत हुआ ।

चीन सरकार सत्ता के मद में चूर है । वह केवल बल प्रयोग से ही झुकते हैं । इसलिये हमें अपनी तैयारी करनी चाहिये । हमें विदेशों से मिलने वाली प्रत्येक सहायता को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करना चाहिये ।

हमारे पीछे हटने का कारण संभवतः यह रहा है कि हमारे सैनिक गुप्तचर अपना कार्य नहीं कर सके अथवा उनके द्वारा प्रेषित सूचना को ठीक से नहीं समझा गया । हमारी असफलताओं की विस्तृत जांच करके आगे जिम्मेदारी निश्चित की जानी चाहिये ।

पाकिस्तान से इस समय समझौता करना उचित नहीं होगा । हमें पाकिस्तान के बारे में वही गलती नहीं करनी चाहिये जो हम ने चीन के बारे में की थी । हमें अनुशासन रखना चाहिये तथा लोगों के भावुक जोश का लाभ उठाना चाहिये । हमें चाहिये कि हम एक लम्बे युद्ध के लिये अपनी शक्ति रक्षित रखें ।

†**प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक-कार्य, प्रतिरक्षा तथा अणुशक्ति मंत्री (श्री जवाहरलाल नेहरू)**: इस संकल्प पर लोक सभा में १६५ सदस्य बोल चुके हैं यद्यपि उन में से अधिकांश सदस्यों ने विषय वस्तु से बाहर की बातें कही हैं और वे काफी ब्योरे पर चले गये हैं, तथापि इतने अधिक सदस्यों के इस चर्चा में भाग लेने, उनके द्वारा विभिन्न सुझाव रखे जाने, अथवा उनकी आलोचनाओं से यह स्पष्ट है कि उन सब ने बुनियादी तौर पर एक ही बात कही है और इससे हमारे देश की एक मात्र भावना व्यक्त होती है ।

मैंने सभा के सम्मुख एक लम्बा संकल्प प्रस्तुत किया है । संकल्प पर दिये गये भाषणों से यह स्पष्ट है कि सभा उसे स्वीकार कर लेगी । मुझे यह अनुभव हुआ है कि हमें इस संकल्प में एक छोटा पैरा जोड़ कर चीन की सरकार को उनकी इस कार्यवाही के लिए धन्यवाद भी देना चाहिए था, क्योंकि उसने हमारी आंखों की पट्टी खोल दी है—पिछले तीन सप्ताहों में देश की वास्तविक शक्ति, उसके दृढ़ एवं अटल निश्चय और एकता की जो झलक मिली है उससे ज्ञात होता है कि हमारा प्राचीन देश अब भी युवा और उत्साही है । सभा के भाषणों से सत-सत रूपों में भारत की एकता ही प्रस्फुटित हुई है ।

भारत की यह एकता हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य का विषय है, भारत की इस चेतना और जागरूकता को हम नहीं भूल सकते । इसका यह स्पष्ट मतलब है कि एक ऐसा देश जो संकटकाल

---

†मूल अंग्रेज़ी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

में इस प्रकार संगठित होकर खड़ा हो सकता है वह कभी पराजित नहीं हो सकता। मैं आशा करता हूं कि पूर्व और पश्चिम के बहुत से देश इसे स्वीकार करेंगे। हमें यह देख कर आश्चर्य हुआ है कि हमारे छोटे-मोटे मतभेद जिनको हम बहुत बड़ा समझते थे, अचानक भुला दिये गये हैं और हमारे सामने एक ही प्रश्न रह गया है कि संकट का मुकाबला किस तरह किया जाय।

निस्संदेह हम ने कुछ गलतियां की हैं, हम इस आक्रमण का मुकाबला करने के लिए तैयार नहीं थे, क्योंकि हम ने शान्ति के मार्ग की अपनाया था। मेरा विश्वास है कि हमारे इसी लक्ष्य के फलस्वरूप ही हमारी भावनाओं में यह क्रांति आई है।

हमारी असावधानी के विषय में बहुत कुछ कहा गया है, तथापि माननीय सदस्यों ने जो आरोप लगये हैं वे न केवल किसी मंत्री विशेष के लिये हैं अपितु भारतीय सेना के भी विरुद्ध हैं। मैं उनके आरोप के उत्तर में इतना ही कहना चाहता हूं कि हमारा मार्ग शान्ति का था।

इसका यह मतलब नहीं कि हमने देश की रक्षा का ध्यान नहीं दिया, अपितु मेरा तात्पर्य है कि हम ने बिल्कुल दूसरे दृष्टिकोण से विचार किया। अब भी हम बहुत कुछ इसी दृष्टिकोण से सोचते हैं। अब भी हम बर्बरता का तरीका नहीं अख्तियार कर सकते हैं। हम ने बर्बरता को निन्दनीय माना है। बर्बरता अपनाने में हम आत्मघात के दोषी बनते हैं। मैं आशा करता हूं कि भारत जो बुनियादी तौर से एक शान्तिप्रियदेश है वह युद्ध के समय भी इस बात को याद रखेगा।

सुदृढ़ बनने और पाश्विक बनने में निश्चित अन्तर है। यहां उस उदाहरण का उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं जिसने हमारे इतिहास को प्रतिष्ठा प्रदान की थी। वह उदाहरण उस काल से सम्बन्धित है जब गांधी जी हमारे स्वतंत्रता संग्राम का भाग्य नियंत्रण कर रहे थे। गांधी जी विनम्रता और शान्ति की प्रतिमूर्ति थे। कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सकता कि गांधी जी पाश्विक थे। भारत या किसी भी देश ने कभी भी उस से अधिक शक्तिशाली व्यक्ति पैदा नहीं किया। उन में शक्ति और बलिदान का अत्यधिक मिश्रण था तब भी उन की वाणी में विनम्रता थी और हमारे विरोधियों और शत्रुओं के प्रति भी उनका मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण था। इसी से उनके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ था। हम में से जिन को उन की सेवा करने का विशेषाधिकार मिला कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह उनकी अपेक्षा अधिक सुदृढ़ है। उस वस्तुतः महान् व्यक्ति की तुलना में हम तो क्षुद्र जीव हैं किन्तु उसके द्वारा सिखाई गई बातों में से कुछ को हम ने सीखा है। जहां तक हम ने उन्हें सीखा हैं वहां तक हम भी शक्तिशाली बने हैं किन्तु पाश्विक नहीं बने। मैं शीत युद्ध और गरम युद्ध के इस पहलू को नहीं चाहता जिससे एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति घृणा करने लगता है और निम्न कोटि का समझने लगता है।

हम में से कुछ लोगों को जो आज बूढ़े हैं प्रथम महायुद्ध की बात याद होगी कि जर्मनी के विरुद्ध कितना अधिक प्रचार किया गया था। मैं जर्मनों का पक्ष नहीं ले रहा—मैं तो समझता हूं कि प्रथम महायुद्ध में वे गलती पर थे और द्वितीय महायुद्ध में भी गलती पर थे—किन्तु हूनों के विरुद्ध इस प्रकार का प्रचार कि किसी भी व्यक्ति को उससे मुक्त न रखा जाये, बहुत दुखजनक है। मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं कि जर्मनी में पश्चिम राष्ट्रों के विरुद्ध भी इसी प्रकार प्रचार किया गया होगा।

युद्ध भयानक होते हैं और उसमें लाखों लोग मर जाते हैं। किन्तु मरना तो हम सब को है और यदि किसी महान् उद्देश्य के लिए यह मृत्यु कुछ देर पहले हो जाती है तो उसका दुख नहीं होना चाहिये। हमें मनुष्य की तरह उसका सामना करना चाहिये। अच्छे उद्देश्य के लिए मृत्यु पर दुःख करने की आवश्यकता नहीं चाहे हमें अपने साथियों और मित्रों से जुदा होते हुए दुःख अवश्य होता। किन्तु पाश्विकता से तो मानव का ह्रास हो जाता है। मृत्यु से मानवता का ह्रास नहीं होता। पाश्विकता और घृणा और इन से पैदा होने वाली बातों से राष्ट्र में ह्रास पैदा होता है। अतः मैं आरम्भ में ही कह देना चाहता हूं कि मुझे आशा है कि हमारे देश में ऐसी भावना पैदा नहीं होगी और यदि यह पैदा हुई तो उसे दुरोत्साहित किया जायेगा। चीनी लोगों के विरुद्ध हमारे मन में कुछ नहीं। हम समझते हैं कि उनकी सरकार ने हमारे साथ दुर्व्यवहार किया है। उनकी सरकार द्वारा उन्हीं के देश में जो कुछ किया गया है हमें उसका भी दुःख है। हम उनकी सहायता नहीं कर सकते। किन्तु हमें किसी देश के लोगों और उनकी सरकार के भेद को समझना चाहिये और विशेषतः ऐसे देश के सम्बन्ध में जो आकार और इतिहास दोनों दृष्टियों से बड़ा है और सरकार ने लोगों के प्रति जो कुछ किया है उसके लिए वहां के लोगों से घृणा नहीं करनी चाहिये।

बहुत से सदस्य पीकिंग रेडियो को सुनते हैं। मैं ने तो कभी सुना नहीं। उन्होंने मुझे बताया है कि पीकिंग रेडियो लगातार भारतीय लोगों से अपील करता रहता है। वह भारतीय लोगों और भारत सरकार या संसद् में भेद रखता है। वह रेडियो प्रचार करता है कि यह सरकार प्रतिक्रियावादी है जो भारतीय लोगों को दबा रही है और उनसे उनकी इच्छा के विरुद्ध काम करवा रही है। मुझे खेद है कि वे लोग इतने भ्रम में हैं क्योंकि अंधा भी देख सकता है कि आज सभी भारतीय एक हैं। इसके लिए सूझदर्शिता की आवश्यकता नहीं है, किन्तु मैं सभा को बताना चाहता हूं कि वे देखें कि उन के प्रचार का कारण क्या है कि वे भारतीय लोगों और विभिन्न सरकारी अधिकरणों तथा दलों में भेद दिखा रहे हैं। इसका कुछ महत्व है। हमें चीनी लोगों और चीनी सरकार तथा चीन से सम्बन्धित हर बात को एक नहीं समझना चाहिये।

मैं नहीं कह सकता कि अब चीनी लोग क्या अनुमान करते है। यदि उन्हें अन्यथा सोचने का अवसर भी मिले तो भी उन के मनों पर एकतरफा प्रचार और एकतरफा समाचारों का ऐसा प्रभाव पड़ा हुआ है कि वे अन्यथा नहीं सोच सकते। हमें सदा सरकार के कार्य और लोगों के भीतर अन्तर समझना चाहिये। इसलिये मुझे दिल्ली या अन्य कुछ स्थानों पर गरीब चीनी दुकानदारों और रेस्तरां चलाने वालों पर आक्रमण का होना पसन्द नहीं आया। जैसेकि वहीं हमारे ऊपर आक्रमण के प्रतीक हैं। संभवतः कुछ लोगों ने ऐसा ही समझा किन्तु उन के लिये ऐसा सोचना गलत था। इस से हम में पाश्विकता पैदा होती है और हमें कलंक लगता है। मैं विशेष रूप से इस पहलू पर बल देना चाहता हूं क्योंकि इस से हमारी शक्ति दृढ़ नहीं होती बल्कि शक्ति का दुरुपयोग करने से हमारी स्नायवी शक्ति निर्बल हो जाती है।

आज का युद्ध प्राचीन युद्ध की अपेक्षा सर्वथा भिन्न है। प्राचीन युद्ध की बात कहते हुए मैं भारत के बारे में कह रहा हूं। मैं महायुद्धों और अन्य बातों की बात नहीं कह रहा। युद्ध में केवल साहस की आवश्यकता नहीं होती। जब व्यापक युद्ध होता है तो उस में हर मानव, पुरुष, स्त्री और संभवतः बच्चा भी युद्ध में सहायता देता है या उस में रुकावट पैदा करता हैं और राष्ट्र की सारी शक्ति स्नायवी और अन्य भी उस में लग जाती है और उसे संगठित तथा प्रयुक्त किया जाता है।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

हम ने पहले और दूसरे महायुद्ध में देखा है जब बहुत शक्तिशाली और बहादुर कौमें पूरी तरह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित हो कर लड़ी थीं और दोनों ओर के लाखों लोग मारे गये थे और आखिर एक कौम का हौसला बिल्कुल ही टूट गया था। शायद वह हौसला हार बैठने वाली कौम थोड़ी देर और लड़ती रहती तो दूसरी कौम विनष्ट हो जाती। पहले महायुद्ध के पश्चात् विस्टन चर्चिल ने कहा था कि यह तो अवसर की बात है कि हम जीत गये हैं क्योंकि दोनों पक्षों ने लड़ाई जारी रखने का दृढ़ निश्चय किया हुआ था। वे युद्ध काल में प्रशिक्षित लोग थे और उन में शक्ति और दृढ़ निश्चय था। आखिर यह सारे राष्ट्र के हौसला हार बैठने की बात होती है। ऐसा हुआ कि जर्मन कुछ देर पहले ही हौसला हार बैठे। इसी प्रकार दूसरे महायुद्ध में आरम्भ में तो यही प्रतीत होता था कि जर्मनी जीतेगा। किन्तु, जीत दूसरे पक्ष की हुई। अतः हमें अनुभव करना चाहिये कि यह मसला केवल हथियारों का नहीं है बल्कि राष्ट्र की समस्त शक्ति का है। राष्ट्र का मन एक उद्देश्य की प्राप्ति के लिये दृढ़निश्चयी हो जाना चाहिये और चाहे कुछ भी हो जाये उसे उस पर दृढ़ रहना चाहिये और साधारण बातों, साधाराण घटनाओं तथा मामूली विवादों पर शक्ति व्यय अथवा विचलित नहीं होनी चाहिये।

मुझे आशा है कि हम राष्ट्र की शक्तियों का उपयोग करेंगे। इस सभा में दिये गये सुझावों और निरन्तर प्राप्त होने वाले सुझावों से लाभ उठायेंगे। किन्तु यदि हम गलती भी करें क्योंकि कोई भी व्यक्ति गलती कर सकता है सच तो यह है किसी एक गलती से एक हार हो जाने का कोई महत्व नहीं है बल्कि महत्व इस का है कि संकट का मुकाबला करने के लिये राष्ट्र की मानसिक शक्ति को संगठित रखा जाये।

वास्तव में तीन सप्ताह पूर्व अर्थात् २० अक्तूबर से पहले अधिकांश लोगों ने यह अनुभव नहीं किया था कि हमें किस तरह के खतरों का सामना करना पड़ेगा। वे समझते थे कि सीमा पर घटनायें हो रही हैं। हमारे माननीय सदस्य कहते थे कि शत्रु को लद्दाख से निकालने के लिये क्यों प्रयत्न नहीं किये जा रहे। वे यह अनुभव नहीं करते थे कि यह काम इतना सुगम नहीं है। संभवतः अब वे अधिक अनुभव करते है कि ये बातें इतनी सुगम नहीं होतीं बल्कि उस के लिये न केवल सारे राष्ट्र की शक्ति की आवश्यकता होती हैं बल्कि बड़ी तैयारी का उपयुक्त प्रयोग तथा निर्देशन करना होता है और सैनिक बातों का ध्यान रखना होता है। जहां ये बातें हमारे विरुद्ध हैं वहीं हमें हार होती है। इस का कोई मतलब नहीं कि हम में शक्ति कितनी है और हमारे जवान कितने सशक्त हैं।

मैं सभा की जानकारी के लिये बता देना चाहता हूं कि आज ही नहीं बल्कि कुछ वर्ष पहले से अर्थात् जब से चीनियों ने लद्दाख में हमारी धरती पर अधिकार जमाना शुरू किया था, नेफा का प्रश्न हमारे समक्ष था। हम ने सोचा था कि यदि वे आक्रमण करें तो हमें क्या करना चाहिये। हमें आशा थी कि वे आक्रमण नहीं करेंगे और इस प्रकार कई डिवीज़न सेना के साथ बड़ा हमला नहीं कर देंगे, किन्तु उन्होंने ऐसा किया। उस समय मुझे परामर्श दिया गया कि हमें मेकमहोन लाइन तक सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि उन्हें निकाल डालना चाहिये, कुछ डराना चाहिये, कुछ लड़ना चाहिय किन्तु वास्तविक प्रतिरक्षा सीमा कुछ नीचे रखनी चाहिये जहां कि प्रतिरक्षा अधिक सशक्त हो सके। एक तो हम आक्रमण की आशा नहीं करते थे और मैं स्पष्टतः स्वीकार करता हूं कि हमें इस तरह अपने ही प्रदेश में पीछे हटना पड़ेगा मैं इस विचार को भी सहन नहीं कर सकता था, और हम ने सैनिक दृष्टि से बिल्कुल अलाभदायक स्थिति में उन का मुकाबला किया। इस के अतिरिक्त आक्रांताओं की संख्या अत्यधिक थी। यह हमारे अधिकारियों और लोगों की आलोचना नहीं है कि वे इस धोखे में आ गये और प्रतिरक्षा के लिये अधिक अच्छे स्थान पर लौट आये।

श्री फ्रैंक एंथनी ने संभवतः कहा था कि हम कुछ प्रतिरक्षा कर सके हैं क्योंकि हमें हथियार मिल गये हैं। मैं हथियारों और सामान के लिये विदेशों का आभारी हूं किन्तु ये हथियार अभी उन्हें पहुंचे नहीं थे जब हम वर्तमान स्थिति में पहुंचे। सेना ने वर्तमान हथियारों से ही चीनी प्रगति को रोक दिया था।

अतः युद्ध के प्रारम्भ से हमारी हारों का प्रमुख कारण यह था कि चीनियों ने बहुत अधिक संख्या से आक्रमण कर दिया था अर्थात् उन की संख्या हम से कई गुना अधिक थी। अधिक अच्छे शस्त्रों का भी प्रश्न पैदा नहीं हुआ। उन के हथियार कुछ अधिक अच्छे थे किन्तु उस प्रश्न का अधिक महत्व नहीं। उन के पास मार्टर अच्छे हैं जो दूरी से मारे जा सकते हैं। वे हथियार अब भी उन के पास हैं किन्तु उन्हें रोक दिया गया हैं। यह मुख्य कारण था जिस के विरुद्ध कुछ नहीं किया जा सकता था वहां की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी। हम ने यही अपराध किया यदि यह अपराध है, कि हम ने ऐसी सैन्य स्थिति में मुकाबला किया जो प्रतिकूल थी। हम ने उन्हें वहां डटने के लिये नहीं कहा। किसी राजनीतिज्ञ के लिये यह कहना गलत होगा। किन्तु हमारे सैनिक पीछे हटने के लिये तैयार नहीं थे और वे टिके रहे जिसकी बहुत हानि उठानी पड़ी।

मैंने राष्ट्र के महान संगठन की ओर संकेत किया है। यह सगठन दलों का नहीं बल्कि दिलों और मस्तिष्कों का है। मुझे हज़ारों चेहरे दिखाई देते है। जब मैं भारत के चेहरे की बात करता हूं तो मुझे भारत के करोड़ों चेहरों की बात कहनी चाहिये क्योंकि वे चाहे किसी भी दल या जाति के हों उन सब पर एक ही भाव अंकित है।

साम्यवादी दल के बारे में मुझे यह कहना हैं कि उन्होंने जो घोषणापत्र तैयार किया है वह ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी गैर-साम्यवादी ने तैयार किया हो। लोग कह सकते हैं कि संभवतः उनके वास्तविक भाव इसमें नहीं हैं किन्तु बाहर के प्रभाव के कारण उन्होंने ऐसा तैयार किया है। भले ही कुछ साम्यवादी इससे सहमत न हों किन्तु उस दल में कुछ लोग हैं जिन्होंने घोषणापत्र पर आपत्ति की थी। यह तथ्य भी कि ऐसी परिस्थिति में उन्होंने ऐसा घोषणापत्र जारी करने की आवश्यकता समझी, महत्वपूर्ण है। इस से पता लगता है कि ऐसी परिस्थितियां हम सब के मन को बदलती हैं चाहे हमारा सम्बन्ध किसी भी दल से और चाहे उस दल से हो जो पहले चीनियों का केवल इसलिये समर्थन करती रही है कि चीनी भी साम्यवादी हैं। फिर भी वे इस आक्रमण के विरुद्ध खड़े हो गये हैं जैसाकि कोई राष्ट्रवादी करेगा। यह अच्छी बात है। हमें इस का लाभ उठाना चाहिये बजाये इस के उन की निन्दा की जाये और उन कारणों का पता लगाया जाये जिन से उन्हें ऐसा करना पड़ा। साम्यवादियों में भी कुछ नेता हैं जो विचारधारा के सम्बन्ध में आपस में झगड़ते है किन्तु साम्यवादी दल से सम्बन्धित बहुत से मज़दूर या अन्य लोग सामान्य लोग है। वे इस विचारधारा से आकर्षित हैं जैसेकि वे इस परिस्थिति से प्रभावित हैं जिससे सभी भारतीय प्रभावित हैं। वे साम्यवादी दल के घोषणा पत्र से भी प्रभावित हुए हैं। यह बहुत लाभप्रद है। अब यह कह कर कि घोषणापत्र गलत है इसलिये हम क्यों उस के प्रभाव को समाप्त कर रहे हैं। अतः मैं घोषणा पत्र का स्वागत करता हूं और हमें उस के आक्रमण के विरुद्ध संगठन पैदा करने के लिये लाभ उठाना चाहिये।

मैं यहां की गई सैकड़ों आलोचनाओं की बात नहीं करूंगा। उन सभी सुझावों पर ध्यानपूर्वक विचार किया जायेगा। कुछ सुझाव तो यह जाने बिना किये गये कि उन्हें पहले ही कार्यान्वित किया जा रहा है, कुछ हम स्वीकार नहीं कर सकते और अन्य सुझावों को हम कार्यान्वित करेंगे।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

अब मैं तैयारी के सामान्य प्रश्न के बारे में कहता हूं। कुछ सदस्य समझते हैं कि हम ने सैनिकों को नंगे पांव और बिना वस्त्रों के लड़ाई पर भेज दिया था। यह असाधारण बात है कि वे निःशस्त्र और नंगे पांव थे।

कुछ सिपाही वहां पर थे। कुछ को सितम्बर में जल्दी में भेजा गया था। हम सर्दियों के कपड़े सितम्बर के मध्य में देते हैं। वे लोग पूरी गर्म वर्दी में ही वहां गये थे। जाते वक्त हर एक को एक एक कम्बल दिया गया। बाद में चार कम्बल दिये जाने लगे। किन्तु ये कम्बल इतनी जगह घेरते थे और उन्हें हवाई जहाज द्वारा भेजा जा रहा था। अतः प्रभारी अधिकारी और सिपाहियों ने स्वयं निश्चय किया कि कम्बल बाद में भेज दिये जांय। उस समय इतनी सर्दी नहीं थी। अतः प्रत्येक एक एक कम्बल ले गया। यह दुर्भाग्य की बात थी क्योंकि बाद में कम्बल हवाई जहाजों द्वारा गिराने पड़े और यह काम खतरनाक था। एक तो चीनी उन पर गोली चला सकते थे। दूसरे पहाड़ों की गहरी ढलानों में यह काम ठीक से नहीं हो सकता था। अक्सर कम्बल खड्ड में गिर जाते थे और उन्हें प्राप्त करना कठिन हो जाता था। अतः हमारी बहुत सी चीजें और ये कम्बल गुम हो गये।

हमारे सिपाहियों के पास दो दो बूटों के जोड़े थे। वहां स्थायी रूप से नियुक्त सिपाहियों को बर्फ की जगहों में काम आने वाले बूट भी दिये हुए थे। अन्य असम से भेजे गये सिपाहियों को भी बूट हवाई जहाजों से भेजने पड़े।

संक्षेप में मैं कहना चाहता हूं कि नेफा में हमारी सारी सेना के पास पूरे कपड़े और बूट थे किन्तु सितम्बर के अन्त में यह अनुभव कर कि चीनी बहुत संख्या में बढ़ रहे हैं हम ने जल्दी में और सैनिक भेजने का निश्चय किया। ऐसी जल्दी में ऐसा भी होता है कि कहीं और जगह भेजे जाने वाले सैनिकों को नेफा भेजना पड़ा और उनके पास सर्दियों के कपड़े नहीं थे। निश्चय किया गया कि उन्हें बाद में वस्त्र भेजे जायेंगे। बस इन बाद में भेजे गये सिपाहियों के पास ही पूरा सामान नहीं था जो कि बाद में भेजा गया—अन्य सबके पास सर्दियों का पूरा सामान था। और हर एक के पास सेना के बूट थे।

कुछ लोगों ने सिपाहियों के बर्फ द्वारा विगलित होने की कहानियां सुनी हैं। ऐसा बहुत ऊंचाई के कारण भी होता है। मुझे ऐसे रोगियों की संख्या तो ज्ञात नहीं किंतु दो या तीन हजार में से केवल ही इस रोग से ग्रस्त हुए थे। नमूनिया आदि के रोगी भी थे जो कि वहां की परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए बहुत अधिक नहीं है। इन में से भी आधे से ज्यादा अधिक ऊंचाई के कारण हुए न कि बूट न होने के कारण। ऐसी दुर्घटना सीमा पर लड़ने वाली सेना के साथ नहीं हुई प्रत्युत् जब २० अक्तूबर को चीनियों ने भारी आक्रमण किया तो एक दो स्थानों पर हमारी सेनाएं बिखर गईं। वे सेना के अड्डे पर नहीं पहुंच सके। वे बहुत पहाड़ों में भटकते रहे इस कारण भी लोगों ने कहा कि मौतें अत्यधिक हुई हैं। किन्तु वे सेनाएं कुछ दिन बाद लौट आईं। इन दिनों में इन लोगों के पास स्वभावतः सेना की सभी सुविधाएं कम्बल आदि उपलब्ध नहीं थीं। वे बहुत ऊंचाई पर भटकते फिरे और उन्हें बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उन्हीं लोगों कुछ बर्फ से प्रपीड़ित हुए। जब वे लौट आये तो उन्हें अस्पताल में रखा गया और वे स्वस्थ हो रहे हैं।

यह कहना गलत है कि हमारे लोगों के पास कपड़े और बुट नहीं थे। दुर्भाग्य की बात है कि यह समय वर्दी बदलने का था। हमारी कुछ सेना को अकस्मात ठंडी वर्दी के साथ ही उधर भेज देना पड़ा और सर्दियों के कपड़े उन तक पहुंचने में कुछ देर लग गई। बर्फ के बूट हम केवल अधिक ऊंचाई के क्षेत्रों में ही देते हैं।

सेना के लिये कपड़े और बूट तो बहुत अच्छे थे किन्तु सामान्यतः हमारी सेना की वर्दी सर्दियों के उपयुक्त नहीं है। उदाहरणतः कश्मीर की लड़ाई में उन्हें विशेष प्रकार के कपड़े दिय गये थे। सेना के पास सर्दियों के लिये सभी प्रकार की चीजें हैं किन्तु उन ऊंचाइयों और घोर सर्दी के उपयुक्त नहीं ।

माननीय सदस्य यह जानना चाहेंगे कि चुशूल के क्षेत्र में इस समय तापमान शून्य से ३० डिग्री नीचे है। वहां जलवायु इतनी सख्त है। १४,००० फुट की ऊंचाई पर वहां की जलवायु के लिये अभ्यस्त होने की जरूरत है कपड़े चाहे कितने भी हों उनका कोई महत्व नहीं । अपने अनुभव से सीख कर सर्दियों के अन्य सामान के अतिरिक्त सैनिकों को मोटे गद्दे के कोट और पतलूने पहुंचाई गई हैं। ये वस्त्र बहुत गर्म होते हैं। २० तारीख के कुछ दिन बाद ही जब हम ने अनुभव किया कि उन के पास ऐसे वस्त्र होने चाहियें, उन्हें सामान पहुंचाना आरम्भ कर दिया गया था। पहले पहल हम ये कोट पतलूने ५०० प्रतिदिन के हिसाब से भेजते रहे और बाद में प्रायः १००० प्रति दिन के हिसाब से भेजे गये ।

दूसरा आरोप यह लगाया गया है कि जवानों के पास उपयुक्त शस्त्रास्त्र नहीं थे। उन्हें भी सामान्य चीजें और ३०३ राइफलें तथा मशीनगनें दी गई थीं। किन्तु उन्हें अर्द्ध स्वचालित राइफलें नहीं दी गई क्योंकि हमारी सेना के पास ऐसे शस्त्र नहीं हैं। पश्चिम की आधुनिकतम सेनाओं के पास भी ऐसे शस्त्र नहीं हैं। इंगलैंड को ही हाल में ही शस्त्र दिये गये हैं। और ऐसा करने में ४ या पांच वर्ष लग गये थे। यह काम इसी वर्ष कुछ महीने पूरा किया गया है। यह लम्बा काम है और इंगलैंड की सेना तो भारत से छोटी है।

हम कई वर्ष इस पर विचार करते रह हैं। इस में कई कठिनाइयां पैदा हुईं, विभिन्न विचार व्यक्त किये गये। आसान ढंग तो यह है कि चीजें मंगवा दी जायें किन्तु आसान ढंग सदा अच्छा नहीं होता। विदेशी मुद्रा की भी निरन्तर कठिनाई है। किसी राष्ट्र के सशस्त्र होने का यह उपाय नहीं है। यदि हम आज कुछ हासिल करते हैं तो फिर गोलीबारूद के लिए निरंतर निर्भर रहना पड़ेगा। यदि विदेश में गैर सरकारी उद्योगपतियों से शस्त्रास्त्र लेने हो तो सदस्यों को पता होगा कि शस्त्रास्त्रों में बहुत बड़ी धांधली होती हैं। वे लोग बहुत पैसा मांगते हैं।

हम विदेशों के गैर-सरकारी उद्योगपतियों से शस्त्रास्त्र लेने के बहुत विरुद्ध थे और चाहते थे कि अर्द्ध स्वचालित राइफलें बनाने के लिए अपने कारखाने लगायें । शांतिकाल में तर्क-वितर्क में अधिक समय लग जाता है। पहले ऐसा संकट आया होता तो हम अधिक अच्छा काम कर सकते। आखिर हमने इन शस्त्रों के निर्माण में ऐसी स्थिति प्राप्त कर ली है कि तीन या चार सप्ताह में ही ऐसे शस्त्रास्त्र बनाने लग जायेंगे और दो तीन महीनों में काफी मात्रा में शस्त्रास्त्र बनाने लगेंगे ।

यह प्रश्न केवल अर्द्ध-स्वचालित राइफलों का ही नहीं था। हमारे पास स्वचालित मशीनगनें, एल एम जी और एम एम जी शस्त्र थे। किन्तु इन कारणों से जिनका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं उनके पास अर्द्ध-स्वचालित राइफलें नहीं थीं। अब हमने ऐसे बहुत से शस्त्र बनाने शुरू कर दिये हैं जो पहले नहीं बनाया करते थे। विदेशी मुद्रा सम्बन्धी कठिनाई के कारण हम ऐसा नहीं कर सके। दो तीन वर्ष पहले की स्थिति की तुलना आज से मत कीजिये। अब तो हमें इस संकट का सामना करना है। हमें जहां कहीं से भी शस्त्र मिलें खरीदने है किन्तु सामान्य स्थिति में उन्हें बनाने का विचार था।

इनमें सामान्यतः कुछ हथियार इस शर्त के साथ खरीदे थे कि हमें उनका निर्माण करने की अनुमति दी जाये। अतः हमने कुछ हथियार काम आरम्भ करने के लिये खरीदे थे।

यहां तक कारखाने लगाने की बात तो ठीक है, किन्तु उसके लिये सुदृढ़ औद्योगिक पृष्ठभूमि चाहिये। सापेक्षतः कृषि प्रधान पृष्ठभूमि में ऐसे कारखाने स्थापित नहीं हो सकते । अब तक तीनों

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

पंचवर्षीय योजनाओं में जो काम हुआ है वह देश को अधिक आधुनिक और अधिक औद्योगीकृत बना कर राष्ट्र को सशस्त्र बनाने और ऐसे आधार के निर्माण के लिये किया गया था कि जिससे हर आवश्यक चीज बनाई जा सके। कुछ सदस्य यह अनुभव करेंगे कि ऐसे काम के लिये सुदृढ़ औद्योगिक आधार की आवश्यकता हैं। इतना ही नहीं बल्कि इसके लिये लोगों में शिक्षा के प्रचार की भी आवश्यकता है क्योंकि प्रत्येक सनिक अच्छा प्रविधिज्ञ (मेकेनिक) होना चाहिये।

अतः भारत को हर दृष्टि से सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता है और लोगों का स्तर उठाने का कार्य ही योजना द्वारा किया जा रहा था। इस बारह वर्ष पहले की अपेक्षा आज हम इस मुसीबत का सामना करने के लिये अधिक सामर्थ्यवान हैं क्योंकि सरकारी और गैर सरकारी उद्योग क्षेत्रों में उद्योग में वृद्धि हुई है। दस बारह वर्ष पूर्व हमारी सेवा के लिये यह काम कठिन था। अब हमारे पास विकास का आधार है और किसी व्यक्ति के मन में आशंका नहीं होनी चाहिये कि हम तीसरी पंचवर्षीय योजना का कार्य करेंगे या युद्ध काल में रत रहेंगे। यह योजना भी युद्ध कार्य का ही अंग है चाहे कुछ कामों को धीमा कर देना होगा। कृषि को ही लीजिये। यह समस्त उद्योग का आधार है। केवल कृषि के सशक्त आधार पर उद्योग को स्थापित किया जा सकता है जो कि युद्ध कार्यों का आधार है।

शिक्षा को लीजिये। हमें न केवल लोगों में शिक्षा का प्रसार करना है बल्कि प्रविधिज्ञ लोगों की बहुत आवश्यकता है। उद्योग के लिये विद्युत् की आवश्यकता है। अतः वे सब प्रमुख चीजें जिनकी हमें आज आवश्यकता है उन्हीं का पंचवर्षीय योजनाओं में विकास किया जा रहा था।

मैं इसी बात पर बल दे रहा हूं कि भूतकाल में भी सारा विचार सेना की दृष्टि से उद्योग पर और स्वयं शस्त्र बनाने पर केन्द्रित रहा है।

आज हमें अन्य देशों से बहुत सा सामान और शस्त्र मिल रहे हैं और हम उनके, विशेषकर अमेरिका और ब्रिटेन के आभारी हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिये कि इस किस्म की प्रतिक्रिया शान्ति काल में नहीं हो सकती थी। स्पष्ट है कि यह केवल चीन द्वारा भारत पर आक्रमण का प्रश्न नहीं है, यह विश्व और एशिया के लिये बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है। वे देश हमारी मदद करते हैं, क्योंकि इन प्रश्नों में उनको अपनी भी अधिक रुचि है। ऐसा शान्तिकाल में नहीं हो सकता। किसी ने कहा था कि कुछ चीजें हम अधिक मूल्य पर खरीद सकते थे। हमें वे विशेष शर्तों पर मिल रही है, जिससे हम पर अधिक भार नहीं पड़ेगा। मेरे विचार में ये चीजें हमें स्वयं बनानी चाहिये। चीन ने क्या किया हैं। चीन और भारत में मुख्य भेद यह है कि क्रान्ति की सफलता से २० वर्ष पूर्व से वे लड़ते आ रहे हैं। वे पहाड़ों में लड़ने के लिये विशेष रूप से उपयुक्त हैं। जेब में चीनी और चाय की थैली रख कर वे आगे बढ़ते जाते हैं और उनको सम्भरण की चिन्ता नहीं होती। उस चीन में शुरू से ही शस्त्रास्त्र निर्माण पर जोर दिया गया है। उन्हें रुस से बहुत सहायता मिली और हजारों लोगों ने हथियारों के उद्योग शुरू किये। हमने भी ये उद्योग शुरू किये थे किन्तु इन पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया। हम ने सारे भारत में उद्योग स्थापित करने पर जोर दिया था और शस्त्रास्त्र उद्योग ने भी साथ-साथ काफी प्रगति की।

पिछले कुछ वर्षों में आयुद्ध कारखानों से सेना को जो माल दिया गया उसमें ५०० प्रतिशत वृद्धि हुई है। १९५६–५७ में यह माल ८.६४ करोड़ रु० था, असैनिक आदेश ३.५२ करोड़, वायु सेना और नौ सेना १.९३ करोड़। १९५७–५८ में सेना को दिया गया माल १२.७८ करोड़ रुपये का था; असैनिक आदेश ३.२७ करोड़, वायु सेना और नौसेना २ करोड़। यह आंकड़े सेना के लिये १२, १४, १६, २४ और १९६१–६२ में ३३½ करोड़ रुपये तक पहुंच गये थे और इस समय यह अनुप्रानतया ६० करोड़ रुपये हैं।

नागरिक आदेशों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है कि हम आयुध कारखानों में वर्मस आदि बनाते हैं। इस प्रकार की आलोचना बहुत अनुचित है। ऐसे अधिकतर आदेश रेलवे और सरकार के लिये है। कुछ ऐसी चीजें इसलिये बनाई जाती हैं, क्योंकि ये और चीजों के निर्माण के दौरान में बन सकती हैं और श्रमिकों की संख्या फालतू होती है। आप देखेंगे कि असैनिक आदेश अधिक नहीं बढ़े, ८ वर्षों में ३½ करोड़ रुपये से ६करोड़ रुपये तक बढ़े हैं जबकि सेना को दिये गये माल ८ करोड़ रुपये से ६० करोड़ रुपये तक बढ़ा है। मशीनरी भी कुछ आयात की गई है। फिर विदेशी मुद्रा की भी समस्या है। हमारे इंजीनियरों ने पुरानी मशीनरी को ठीक कर के उसका प्रयोग किया है यद्यपि नई मशीनरी से काम लेना अधिक अच्छा होता है। मैं आयुध कारखानों में काम करने वाले कर्मचारियों को बधाई देता हूं क्यों कि वे सक्षम हैं और उनमें उत्साह भरा हुआ है। वे दिन रात काम कर रहे हैं और वे काम करके दिखाना चाहते हैं।

मैं आपको बताना चाहूंगा कि परिस्थितियों से किसी तरह यथार्थवादी बनना पड़ता है। सेना को दी जाने वाली खाद्य का सम्भरण इतना आसान नहीं होता। पिछले दो या तीन सप्ताहों से सेना खाद्य विभाग और प्रतिरक्षा विज्ञान संगठन तथा खाद्य और कृषि मन्त्रालय ने ऐसे प्रयोग किये हैं कि जमाया हुआ खाद्य बनाया जाये, जिसे जेबों में रख लिया जाये और जो कई दिनों तक काफी हो। आज सुबह ही मैंने ऐसे खाद्य का एक प्रदर्शन देखा, जो कि देखने और खाने में बहुत अच्छे हैं। गुड़ भी ऊंचाई के लिये बहुत अच्छी चीज है। हमने इन खाद्यों को युद्ध क्षेत्र में सिपाहियों के लिये भेजा भी हैं।

न्यायालयों की तरफ से सिपाहियों को जो नोटिस मिलते हैं, उन्हें भी संकट के समय के लिये रोक लेने की कार्यवाही की गई है।

कुछ लोगों ने यह आलोचना की है कि हमारे राजनयिक मिशन चीनी प्रचार का मुकाबला करने में पीछे रहे है। मेरी सूचना यह हैं कि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। किन्तु दूसरे देशों की प्रतिक्रिया केवल हमारे कथनों पर निर्भर नहीं करती। अन्य पहलू जिन में डर भी होता है इस में सम्मिलित होते हैं। बहुत से देशों की पहली प्रतिक्रिया यह थी कि उन्हें दुःख और आश्चर्य हुआ कि शीघ्र कोई युद्ध-विराम और समझौता हो जायेगा। अब यह आश्चर्य कम होता जा रहा है और वे हमारे समर्थन को आ रहे हैं। मिश्र ने चीनी सरकार को कुछ सुझाव दिये हैं जो कि हमारे युद्ध-विराम सुझावों से मिलते जुलते हैं हमारे राजनयिक मिशनों की आलोचना करना उचित नहीं है। यह याद रखना चाहिये कि उन देशों के सम्वाददाता भारत में होते हैं जो कि उन्हें समाचार भेजते रहते हैं।

पाकिस्तान और नेपाल के बारे में मेरे लिये निश्चित रूप से कुछ कहना बहुत कठिन हैं। किन्तु नेपाल के बारे में मैं कह सकत हूं कि उसका रवैया पहले से अधिक मैत्री वाला है। हमने स्पष्ट कर दिया है कि हम नेपाल में गड़बड़ नहीं देखना चाहते। अब नेपाल को हमारे कहने पर विश्वास है और हमारे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण रहेंगे।

पाकिस्तान के बारे में भी मैं कुछ निश्चित नहीं कह सकता किन्तु वहां के समाचार पत्रों का रवैया विरोधी ही रहा है। किन्तु मेरे विचार में वे वहां के लोगों या अधिकारियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते। पहले उनका ख्याल था कि ये मामूली सीमान्त झगड़े है किन्तु अब वे समझ रहे हैं कि ये कितने महत्वपूर्ण हैं और अब वे इस पर पुनर्विचार कर रहे हैं।

रूस हमारे प्रति मैत्रीपूर्ण रहा है। किन्तु उनकी स्थिति बहुत कठिन है क्योंकि यह चीन का मित्र देश है। हम इस बात को समझते हैं और उनके बीच किसी झगड़े की आशा नहीं करते। हमें किसी देश को कोई सुझाव नहीं देना है। हमें रूस की शुभ कामनायें प्राप्त है और भविष्य में भी प्राप्त रहेंगी।

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

चीनी सरकार भारत प्रतिरक्षा अधिनियम के बारे में काफी प्रचार कर रही है, जैसे कि इसे यहां के चीनियों के लिये भी बनाया गया हो, यह यहां की स्थिति का मुकाबला करने के लिये बनाया गया है। यदि कोई चीनी शरारत करे, तो वह भी उसकी ज़द में आयेगा। कठिनाई यह है कि चीनियों का शेष विश्व के बारे में उलटा दृष्टिकोण है। उनका यह बहुत पुराना विचार है कि जो लोग चीन की सीमाओं से बाहर हैं, वे उतने उन्नत नहीं हैं जितने वे स्वयं हैं।

एक और बात है। युद्ध विराम के लिए हमारी पेशकश के बारे में कुछ आलोचना हुई है। हम ने कहा है कि किसी चीज की चर्चा करने से पहले चीनी फौजें ८ सितम्बर से पहली वाली जगह पर चली जाएं अर्थात् उस स्थान पर चली जाएं जब कि लगभग दो महीने पहले थी जिस समय उन्होंने पहली बार थागला चौकी को पार किया। उन्होंने विभिन्न सुझाव दिये हैं जो कि लोगों को धोखा दे सकती हैं। वे नवम्बर, १९५९ की स्थिति को जाने के लिये कहते हैं। जो इसे नहीं जानते हैं वे लोग तो हैरान होंगे कि वे तीन वर्ष पहले की स्थिति पर जाना चाहते हैं। लगभग नवम्बर, १९५९ को चीनियों ने अर्थात् श्री चाऊ-एन-लाई ने अपने तथ्यों के अनुसार इन क्षेत्रों पर पहली बार दावा किया। पहले वे क्षेत्र उन नक्शों में तो थे, परन्तु सरकारी तौर पर उन पर यह किसी ने दावा नहीं किया। यथार्थ में सरकारी तौर पर उन्होंने कहा कि उन के नक्शे पुराने हैं आधुनिकतम नहीं हैं और वे उन्हें ठीक करेंगे, परन्तु १९५९ में पहली बार उन्होंने उन क्षेत्रों पर दावा किया। इतने में वे लद्दाख में काफी घुस गए थे।

१९५९ में हमारी विरोधी कार्यवाई शुरू हुई। १९५९, १९६० और १९६१ में हम लद्दाख में काफी आगे बढ़े और वहां कई चौकियां स्थापित की। फिर हमने समझा कि इन चौकियों का ध्यय उनको आगे बढ़ने से रोकना था। यदि वे लड़ाई में इसका फैसला न करते वहां उनसे बड़ पैमाने पर हथियारों से लड़ना कठिन था क्योंकि उन्हें कई लाभ थे। उनकी सड़कें वहां तक मौजूद थीं, वे टैंक इत्यादि सभी हथियार वहां तिब्बत से ला सकते थे जो कि नज़दीक है, अधिकतर चपटा प्रदेश है जब कि हमारे लिये यद्यपि हम ने कुछ प्रगति कर ली थी—सड़क तो अभी बनाई है उस समय यह भी नहीं थी—बहुत कठिनाईयां थीं। वहां जाने के लिये महीनों लगते फिर भी उनको बढ़ने से रोकने के लिये हम ने चौकियां बनाईं और उन से वे आगे बढ़ने से रोके गए। यथार्थ में, हम ने उन्हें कुछ पीछे धकेला। नेफा क्षेत्र में हमने पहले सीमा पर या उसके बिल्कुल नीचे अपनी चौकियां बनाई थीं क्योंकि ऊंची चोटी पर चौकी नहीं बन सकती। थागला दर्रे में भी हमारी चौकी दो तीन मील अन्दर थी, दर्रे पर थीं।

यदि हम उन के सुझाव मान लें तो उन के कहने के अनुसार वे मैकमोहन लाईन तक वापस चले जाऐंगे लेकिन फिर वे कहते हैं कि मेकमोहन लाईन के विषय में उनका विचार हमारे से भिन्न था और यह चोटी के इस ओर है और जहां हम आज हैं हमें वहां से २० किलोमीटर और पीछे हटना है। अर्थात् लगभग ४० किलोमीटर ऐसा क्षेत्र हो जाएगा जो न तो उनकी फौजों के कब्जे में होगा और न हमारी फौजों के। इस का मतलब यह है कि थागला दर्रे के इस ओर उनकी पक्की बुनियाद होगी, जो कि खुला क्षेत्र है जिस में वे जब चाहें घुस सकते हैं। हमारे लिए यह मानना असम्भव था। लद्दाख में जहां है वहां से भी हमें पीछे हटना पड़ता और उन के शीघ्र आगे बढ़ने का प्रश्न नहीं, परन्तु इस से भविष्य में यदि वह बढ़ना चाहें तो उन्हें सुविधा होगी। अतः हम ने उन के प्रस्तावों को अस्वीकृत कर दिया।

हम ने कहा कि नेफा और लद्दाख में ८ सितम्बर की स्थिति कर दी जाए। इसका यह अभिप्राय था कि नेफा में न केवल वे पीछे हटेंगे परन्तु हम उन चौकियों तक आगे बढ़ेंगे जो हमारे पास थी और बीच में कोई खाली स्थान नहीं होगा और लद्दाख में भी हम काफी बढ़ेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि "आप ऐसे कैसे कह सकते हैं ? आप को बातचीत नहीं करनी चाहिये। उन के साथ आप को बिल्कुल बातचीत नहीं करनी चाहिए जब तक कि आप उन्हें भारतीय क्षेत्र से बिल्कुल बाहर न खदेड़ दें।" यह बड़ी अच्छी बात हैं। परन्तु जिसे किसी ने पूर्णतया पराजित किया हो और बाहर निकाल दिया हो उस से वह बात नहीं करता। बात चीत करने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि बिना बात चीत के हम ने अपना लक्ष्य पा लिया है, तो बाचतचीत का प्रश्न नहीं उठता। सदन को याद रखना चाहिए कि इन बातों में पक्की लेकिन यथार्थवादी राय बनानी चाहिए। हमारा सुझाव उन्होंने नहीं माना है, क्योंकि इस से हमारी शक्ति बढ़ती है और उन की कम होती है। ८ सितम्बर की लाइन के सम्बन्ध में जो सुझाव हम ने दिया वह ऐसा सुझाव है जिसकी सराहना विश्व के बड़े भाग ने की है जिस में तटस्थ और अन्य देश हैं। ऐसा सुझाव कि जब तक आप पराजय नहीं मानते तब तक आपसे बात नहीं करेंगे कोई देश दूसरे देश को नहीं भेजता। अतः आशा है कि सभा इस बात को समझेगी कि हमारा सुझाव ठीक सुझाव है और इसका पूर्ण समर्थन करेगी।

कुछ सदस्यों ने कहा कि हम तिब्बत को आजाद कराने के बारे में कहें।

**श्री बागड़ी** (हिसार) : मनसर गांव हिन्दुस्तान में है वहां की आबादी हिन्दुस्तानी है।

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : दुर्भाग्यवश इतिहास सामने वाले माननीय सदस्यों जैसे व्यक्ति नहीं बनाते। यह कहना आश्चर्यजनक है कि हम तिब्बत को आजाद कराएंगे यह अच्छी बात है यदि तिब्बत आजाद हो जाए। परन्तु इस समय या किसी समय भी ऐसा काम करना असाधारण मालूम पड़ता है और तथ्यों पर आधारित नहीं हैं।

मैं ने कहा है कि भारत और चीन के युद्ध की विजय और पराजय के बारे में सोचना—लड़ाईयां हो सकती हैं और हम उन्हें पीछे धकेल सकते हैं। जैसी हमें आशा है —सोचना ही रहेगा। ऐसा नहीं हो सकता और न होगा। हमें यथार्थवादी होना चाहिए। क्या पीकिंग के लिये मार्च करें ?

†**श्री प्रिय गुप्त** ( कटिहार ) : क्या हम उन्हें देहली आने देंगे ?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू** : मैं बहस नहीं करना चाहता। परन्तु मेरे विचार में ऐसे युद्ध का अन्त किसी एक पक्ष की विजय या पराजय में नहीं हो सकता। दो बड़े देश हैं। कोई भी पराजय नहीं मानेगा। अतः युद्ध समाप्त करने का कोई उपाय तो हमारे लिये सम्मानपूर्ण निकालना है। हम ने कहा है कि हम जब उन के कब्जे में जो हमारा क्षेत्र है उसे छुड़ा लेंगे तो युद्ध खत्म कर देंगे। यह कहना कि हम तिब्बत आजाद करवा लेंगे हम नहीं कर पाएंगे यद्यपि हमारे पास ऐसा बम्ब भी क्यों न हो। इस के बारे में बात करना फजूल है।

वे हमेशा कहते रहें कि उनकी हम से विशेष नाराजगी यह है कि हम तिब्बत में विद्रोह करवाने का प्रोत्साहन करते रहेंगे। इस चीज़ ने आखिर में उन्हें हमारे विरुद्ध कर दिया। यदि हम ऐसा कहें तो उन के उस तर्क को पुष्टि मिलेगी जिस का आधार नहीं है और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी काफी प्रबलता मिलती। इसका मतलब ऐसी बात कहना होगा जो हमारे लिये असम्भव

†मूल अंग्रेजी में

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

है। अपने देश से उन्हें बाहर निकालना हमारे लिये काफी बड़ा काम है। हम इसे करेंगे। यह कठिन होगा। काफी समय लगेगा। अतः मुझे आशा है कि यद्यपि हमें मजबूत बनाना है हमें ऐसी बात जो कि स्पष्टतः मूर्खता की है इसलिए नहीं कहनी चाहिए कि हम दूसरों से बहादुर लगें।

जो संकल्प मैं ने सदन के सामने रखा है वह काफी व्यापक है। यह दृढ़ निश्चय और सेवा भावना का संकल्प है। अतः मुझे आशा है कि इस संकल्प को स्वीकार करते समय सदन सेवा भावों से ओत-प्रोत है, लम्बी चौड़ी बातों को भी सोचना है और यह समझना है कि हमारे सामने बहुत कठिन काम है और हम इसे करने के लिये दृढ़ निश्चय हैं चाहे कितना समय लगे और कुछ भी नतीजा निकले। ऐसा करने की हमें जो देश में पुरुषों, स्त्रियों, और सार्वाधिक बच्चों में भी भावनात्मक एकता पैदा हुई है उस से प्रोत्साहन मिलेगा। अतः मैं इस संकल्प को सदन के सामने इस विश्वास और दृढ़ निश्चय से रखता हूं कि वे सभी जो यहां उपस्थित हैं और देश इसे मानेगा और इस के अनुसार चलेगा।

†**श्री हरि विष्णु कामत** (होशंगाबाद): दार्जिलिंग में महाराजकुमार सिक्कम ने कहा है कि पिछले कुछ दिनों से सिक्कम की सीमा पर बहुत चीनी सेनाएं एकत्रित हो रही हैं। क्या प्रधान मंत्री यह आश्वासन देंगे कि नेफा के मुकाबले हमारी सेना सिक्कम की रक्षा करने के लिए अधिक तैयार है?

†**श्री जवाहरलाल नेहरू**: मुझे अफसोस है कि ऐसे प्रश्न पूछे जाते है। मैं किसी प्रकार का आश्वासन नहीं दूंगा। मैं कैसे आश्वासन दे सकता हूं। मैं इस के अतिरिक्त कोई और आश्वासन नहीं दे सकता कि हम सब कदम यथा शक्ति उठा रहे हैं। मैं उन मामलों में भविष्य के बारे में कैसे आश्वासन दे सकता हूं जिनका निर्णय मेरे आश्वासनों तक नहीं होगा परन्तु अन्य बातों से होता है। मेरे विचार में चीनी यदि वे चुम्बी घाटी से आने जाने का साहस करें तो आने नहीं दिया जाएगा और उन्हें ऐसा करना आसान नहीं होगा।

मुझे आज ३५ संसद सदस्यों का पत्र मिला है: उन्होंने कहीं भी सेवा करने के लिये पेशकश की है। मैं उनका बहुत आभारी हूं और उनकी पेशकश का स्वागत करता हूं? शीघ्र उनकी सेवाओं का कैसे लाभ उठाया जा सकता है इस बात को तो मझे नहीं पता। ज्योंही हमारे कार्यों की प्रगति होगी सब प्रकार के अधिक से अधिक व्यक्तियों के लिए काम दिया जाएगा।

**श्री राम सेवक यादव** (बाराबंकी): अध्यक्ष महोदय: मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं।

**अध्यक्ष महोदय**: मेरे खयाल से इस वक्त प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं है।

**श्री राम सेवक यादव**: मेरा प्रश्न यह है कि और जो देश में जोश है उसको देखते हुए देश और हम सभी जानना चाहते हैं कि इस युद्ध का उद्देश्य क्या है यानी लड़ाई कहां रुकेगी और क्या यह आदेश दिये गये हैं .... (**अन्तर्बाधा**). जहां तक चीन आगे बढ़ आया है अगर वह और आगे हमला न करे तो क्या हमारे सिपाही जहां हैं वहां रुके रहेंगे या आगे बढ़ कर अपना हिस्सा वापस लेंगे। मेरा सवाल यह है कि यह युद्ध कहां रुकेगा। (**अन्तर्बाधा**)।

---

†मूल अंग्रेजी में